National Journal of Multidisciplinary Research and Development
www.newresearchjournal.com
ISSN: 2455-9040
Received: 07-01-2025, Accepted: 06-02-2025, Published: 21-02-2025
Volume 10, Issue 1, 2025, Page No. 68-73

ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन और भारत के स्वतंत्रता संघर्ष पर चंपारण सत्याग्रह का प्रभाव

श्वेताराज[1], डॉ. नलिन विलोचन[2]
[1] शोधार्थी, इतिहास विभाग, बी.आर.ए.बी.यू., मुजफ्फरपुर, बिहार, भारत
[2] प्रोफेसर, इतिहास विभाग, एम पि. सिन्हा. साइन्स, कॉलेज मुजफ्फरपुर, बी.आर.ए.बी.यू., मुजफ्फरपुर, बिहार, भारत

सारांश
चंपारण सत्याग्रह, जिसे चंपारण आंदोलन के रूप में भी जाना जाता है, महात्मा गांधी द्वारा 1917 में बिहार, भारत के चंपारण जिले में शुरू किया गया एक सविनय अवज्ञा आंदोलन था। इस आंदोलन का ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन और भारत के स्वतंत्रता संग्राम दोनों पर दूरगामी प्रभाव पड़ा। उस समय, अंग्रेज अपने कपड़ा उद्योग के पतन के कारण गंभीर आर्थिक चुनौतियों का सामना कर रहे थे। इसे पुनर्जीवित करने के लिए, उन्होंने एक ऐसी प्रणाली लागू की थी, जिसमें भारतीय किसानों को खाद्य फसलों के बजाय नील उगाने के लिए मजबूर किया जाता था। हालाँकि, इससे किसानों का शोषण और उनके रहने की स्थिति खराब हो गई। चंपारण में गांधी के आगमन ने इन अनुचित प्रथाओं पर ध्यान आकर्षित किया और हजारों किसानों को उनके शांतिपूर्ण विरोध में शामिल होने के लिए प्रेरित किया। इस आंदोलन के माध्यम से, उन्होंने अन्याय के खिलाफ सत्याग्रह या अहिंसक प्रतिरोध की अपनी अवधारणा पेश की। इस आंदोलन का प्रभाव न केवल चंपारण में बल्कि पूरे भारत में महसूस किया गया। गांधी के तरीकों और सिद्धांतों की सफलता ने देश भर में कई अन्य लोगों को उत्पीड़न के खिलाफ अपने संघर्षों के लिए इसी तरह के साधन अपनाने के लिए प्रेरित किया। इसने असहयोग आंदोलन और नमक सत्याग्रह जैसे भविष्य के जन आंदोलनों के लिए एक मजबूत नींव रखी, जिसके परिणामस्वरूप अंततः भारत को ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से स्वतंत्रता मिली।

मूल शब्दः चंपारण सत्याग्रह, उद्योग, आर्थिक, संगठित और असहयोग।

चंपारण सत्याग्रह भारत के स्वतंत्रता संग्राम में एक महत्वपूर्ण घटना थी और इसे ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के खिलाफ महात्मा गांधी द्वारा नेतृत्व किए गए पहले प्रमुख अहिंसक प्रतिरोध आंदोलन के रूप में चिह्नित किया गया था। यह 1917 में भारत के बिहार के चंपारण जिले में हुआ था और इसकी सफलता ने भारतीय समाज और ब्रिटिश नीतियों दोनों पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला। गांधी द्वारा चंपारण को अपने युद्ध के मैदान के रूप में चुनने के मुख्य कारणों में से एक इस क्षेत्र में प्रचलित नील की खेती करने वालों की शोषणकारी प्रथाएँ थीं। किसानों, जिन्हें ष्रैयतष के रूप में भी जाना जाता है, को ब्रिटिश जमींदारों के साथ एक अनुचित समझौते के तहत अपनी जमीन के कम से कम तीन–बीसवें हिस्से पर नील की खेती करने के लिए मजबूर किया गया था। रैयतों को इस हिस्से पर खाद्य फसलें उगाने की अनुमति नहीं थी, जिससे उन्हें गंभीर आर्थिक संकट और भुखमरी का सामना करना पड़ा। गांधी के चंपारण आगमन ने इन उत्पीड़ित किसानों के बीच आशा जगाई, जिन्होंने उन्हें एक ऐसे नेता के रूप में देखा जो न्याय के लिए उनकी लड़ाई लड़ सकता था। उन्होंने शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन आयोजित किए, ग्रामीणों के साथ बैठकों को संबोधित किया, उनकी शिकायतों को सुना और उनकी जीवन स्थितियों का अध्ययन किया, जिसने अहिंसक साधनों के माध्यम से परिवर्तन लाने के उनके दृढ़ संकल्प को और मजबूत किया। इस सत्याग्रह को पूरे भारत में व्यापक राष्ट्रीय ध्यान मिला।

साहित्य समीक्षा
चंपारण सत्याग्रह, जिसे चंपारण आंदोलन के रूप में भी जाना जाता है, ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से स्वतंत्रता के लिए भारत के संघर्ष में एक महत्वपूर्ण घटना थी। महात्मा गांधी के नेतृत्व में वर्तमान बिहार में शोषक और अन्यायपूर्ण नील बागानों के खिलाफ यह अहिंसक विरोध भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में एक महत्वपूर्ण मोड़ था। उस समय, भारत ब्रिटिश नियंत्रण में था और बागान मालिकों द्वारा गंभीर आर्थिक शोषण का सामना करना पड़ा, जिन्होंने गरीब किसानों को उनके अस्तित्व के लिए आवश्यक खाद्य फसलों के बजाय नील उगाने के लिए मजबूर किया। किसानों को अपनी खेती की जमीन पर उच्च किराए और करों के अधीन किया गया था। उन्हें बागान मालिकों की दुकानों से महंगे बीज और अन्य सामग्री भी बहुत अधिक कीमतों पर खरीदनी पड़ती थी।

आंदोलन का उद्देश्य नील की खेती करने वाले किसानों पर ब्रिटिश जमींदारों के हाथों होने वाले शोषण और उत्पीड़न की ओर ध्यान आकर्षित करना और न्याय की मांग करना था। इस विषय पर एक उल्लेखनीय अध्ययन जूडिथ एम. ब्राउन (2013) द्वारा षगांधी का राजनीति में कदमरू उनके सामाजिक सक्रियता की उत्पत्तिष है। अपनी पुस्तक में, ब्राउन ने जांच की है कि भारतीय इतिहास के इस महत्वपूर्ण क्षण के दौरान महात्मा गांधी एक नेता के रूप में कैसे उभरे। उनका तर्क है कि यह इस विशेष संघर्ष के माध्यम से था कि गांधी ने अपना ध्यान व्यक्तिगत आध्यात्मिक विकास से सामाजिक सक्रियता और राजनीतिक नेतृत्व पर केंद्रित किया। चंपारण सत्याग्रह के प्रभाव को कम करके नहीं आंका जा सकता है; यह न केवल गांधी के लिए बल्कि भारत के स्वतंत्रता संग्राम के लिए भी एक महत्वपूर्ण मोड़ था।

इस आंदोलन का ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन और भारत के स्वतंत्रता संग्राम दोनों पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा। ष्चंपारण आंदोलनरू भारतीय राष्ट्रवाद के लिए एक आँख खोलने वालाष के लेखक राजीव मोलॉय चौधरी (2015) के अनुसार, चंपारण सत्याग्रह ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में एक महत्वपूर्ण मोड़ दिया। इसने न केवल ब्रिटिश व्यवस्था की खामियों को उजागर किया, बल्कि भारतीयों को यह भी दिखाया कि उनके पास अहिंसक साधनों के माध्यम से उत्पीड़न का विरोध करने की शक्ति है। इस आंदोलन का पहला बड़ा प्रभाव ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन पर पड़ा। सत्याग्रह की सफलता ने साबित कर दिया कि हिंसा का सहारा लिए बिना शक्तिशाली ब्रिटिश साम्राज्य को चुनौती देना संभव था।

अनुसंधान अंतराल

चंपारण सत्याग्रह ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से स्वतंत्रता के लिए भारत के संघर्ष में एक महत्वपूर्ण क्षण था। इसने महात्मा गांधी के अहिंसक प्रतिरोध के दर्शन और रणनीति की शुरुआत को चिह्नित किया, जो भारत के मुक्ति आंदोलन का केंद्र बन गया। हालाँकि, इसकी महत्वपूर्ण भूमिका के बावजूद, इस बात पर अभी भी शोध अंतराल है कि इस सत्याग्रह ने भारतीय स्वतंत्रता की बड़ी तस्वीर को कैसे प्रभावित किया। एक पहलू जिस पर आगे की खोज की आवश्यकता है, वह है भारत में स्वतंत्रता सेनानियों और आम जनता के मानस और मनोबल पर चंपारण सत्याग्रह का प्रभाव। भारतीयों में एकता, गौरव और दृढ़ संकल्प की भावना पैदा करने में इस घटना के महत्व को कम करके नहीं आंका जा सकता। दमनकारी ब्रिटिश नीतियों के खिलाफ खड़े होकर, गांधी और उनके समर्थकों ने न केवल बदलाव की ठोस उम्मीद प्रदान की, बल्कि लोगों के भीतर अन्यायपूर्ण सत्ता को चुनौती देने की आग भी जलाई। इसके अलावा, इस बात पर भी सीमित शोध है कि अंतरराष्ट्रीय समुदाय ने चंपारण की घटनाओं को कैसे देखा या प्रतिक्रिया दी। जैसे ही गांधी के शांतिपूर्ण विरोध की खबर भारत की सीमाओं से परे फैली, इसने उपनिवेशवाद और उत्पीड़न के खिलाफ लड़ने वाले अन्य देशों का ध्यान आकर्षित किया।

चंपारण सत्याग्रह और भारत के स्वतंत्रता संघर्ष में इसका महत्व

चंपारण सत्याग्रह, जिसे चंपारण आंदोलन के रूप में भी जाना जाता है, ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से स्वतंत्रता के लिए भारत के संघर्ष में एक महत्वपूर्ण घटना थी। यह महात्मा गांधी के नेतृत्व में 1917 में बिहार के चंपारण जिले में हुआ था। उस समय, चंपारण के किसानों को ब्रिटिश जमींदारों द्वारा बड़े पैमाने पर नील की खेती करने के लिए मजबूर किया जाता था, जिनका उनकी भूमि और जीवन पर पूरा नियंत्रण था। इस प्रणाली को शतिनकठियाश प्रणाली के रूप में जाना जाता था, जहाँ एक तिहाई भूमि पर नील की खेती करनी होती थी जिसे फिर ब्रिटिश कारखानों को उनके द्वारा निर्धारित मूल्य पर बेचा जाता था। इन किसानों के शोषण के कारण अत्यधिक गरीबी और खराब जीवन स्तर पैदा हुआ। किसान मुश्किल से अपना गुजारा कर पाते थे और अक्सर अप्रत्याशित मौसम की स्थिति या कम पैदावार के कारण कर्ज में डूब जाते थे। चोट पर नमक छिड़कने के लिए, उन्हें निर्दयी बागान मालिकों के हाथों शारीरिक शोषण का भी सामना करना पड़ता था। इसी दौरान राज कुमार शुक्ला, एक स्थानीय किसान जिनसे गांधी मुज़फ़्फ़रपुर में अपने प्रवास के दौरान पहले भी मिल चुके थे, उनकी मदद के लिए आगे आए। उन्होंने बताया कि किस प्रकार हजारों किसानों पर अत्याचार किया जा रहा है और उनसे चंपारण आकर स्वयं देखने का आग्रह किया।

गांधीजी ने इस निमंत्रण को स्वीकार किया और अप्रैल 1917 में चंपारण का दौरा किया। उन्होंने किसानों पर हो रहे अत्याचारों को प्रत्यक्ष रूप से देखा और तुरंत इस अन्यायपूर्ण व्यवस्था के खिलाफ शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन आयोजित करना शुरू कर दिया। उन्होंने सभी क्षेत्रों के लोगों – छात्रों, शिक्षकों, वकीलों से ब्रिटिश उत्पीड़न के खिलाफ अहिंसक प्रतिरोध में शामिल होने का आग्रह किया। प्रतिक्रिया जबरदस्त थी क्योंकि हजारों लोग गांधी के साथ जुड़ गए, हिंदू और मुस्लिम दोनों उनके नेतृत्व में एकजुट हुए। आंदोलन की सफलता हिंदू–मुस्लिम एकता के प्रति सच्चे रहते हुए बिना किसी डर या आरक्षण के नील की खेती का बहिष्कार करने पर निर्भर थी, जिसने बाद के इतिहास में सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930) और भारत छोड़ो आंदोलन (1942) जैसे अन्य आंदोलनों को प्रेरित किया। इस आंदोलन ने प्रतिरोध के एक उपकरण के रूप में गांधी द्वारा सत्याग्रह के उपयोग की शुरुआत को भी चिह्नित किया। इसमें हिंसा का सहारा लेने के बजाय परिवर्तन लाने के साधन के रूप में शांतिपूर्ण सविनय अवज्ञा, असहयोग और बहिष्कार शामिल थे।

महात्मा गांधी की भूमिका और उनकी अहिंसक प्रतिरोध की विचारधारा

महात्मा गांधी, जिन्हें भारत में "राष्ट्रपिता" के रूप में भी जाना जाता है, ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अहिंसक प्रतिरोध की उनकी विचारधारा, जिसे सत्याग्रह या सत्य शक्ति भी कहा जाता है, 1917 में चंपारण सत्याग्रह के दौरान उनके अनुभवों से काफी प्रभावित थी। चंपारण सत्याग्रह में गांधी की भागीदारी ब्रिटिश औपनिवेशिक नीतियों का परिणाम थी जो भारतीय किसानों के प्रति शोषणकारी और दमनकारी थी। अंग्रेजों ने बिहार के चंपारण जिले के किसानों पर नील की खेती करने के लिए दबाव डाला, जिससे अत्यधिक कर और अनुचित व्यवहार हुआ। इससे किसानों में विरोध भड़क उठा, लेकिन उनका मार्गदर्शन करने के लिए उनके पास कोई नेता नहीं था। तभी महात्मा गांधी इस क्षेत्र में आए और अपने साथ अहिंसक प्रतिरोध का अनूठा दर्शन लेकर आए। गांधी का मानना था कि हिंसा से और अधिक हिंसा ही पैदा होती है और शांतिपूर्ण तरीकों से ही वास्तविक परिवर्तन लाया जा सकता है।

अहिंसक तरीकों की वकालत के माध्यम से, गांधी ने अन्याय के खिलाफ अपनी लड़ाई में पूरे भारत से हजारों किसानों को सफलतापूर्वक शामिल किया। अहिंसा के लिए यह व्यापक समर्थन न केवल चंपारण सत्याग्रह के लिए बल्कि भारत के स्वतंत्रता संग्राम के लिए भी एक महत्वपूर्ण मोड़ बन गया क्योंकि इसने भविष्य के आंदोलनों के लिए एक उदाहरण स्थापित किया। चंपारण सत्याग्रह को अपार सफलता मिली क्योंकि गांधी ब्रिटिश अधिकारियों के साथ बातचीत करने और उत्पीड़ित किसानों के लिए उचित मुआवज़ा दिलाने में कामयाब रहे। हालाँकि, इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि इस आंदोलन ने भविष्य के अहिंसक विरोधों के लिए एक खाका तैयार किया और गांधी की विचारधारा को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिसका इस्तेमाल उन्होंने औपनिवेशिक शासन के खिलाफ भारत की लड़ाई के दौरान प्रभावी ढंग से किया। महात्मा गांधी के दर्शन का प्रभाव केवल निष्क्रिय प्रतिरोध से कहीं आगे तक फैला हुआ था।

भारतीय समाज और सरकार पर विरोध का प्रभाव

चंपारण सत्याग्रह, जिसे चंपारण आंदोलन के नाम से भी जाना जाता है, भारत के स्वतंत्रता संग्राम में एक महत्वपूर्ण घटना थी। इसने न केवल ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन को चुनौती दी, बल्कि भारतीय समाज और सरकार पर भी गहरा प्रभाव डाला। इस खंड में, हम इन पहलुओं पर विरोध के प्रभावों का विस्तार से पता लगाएंगे।

सामाजिक प्रभाव

चंपारण सत्याग्रह एक सामूहिक विरोध था जिसने विभिन्न पृष्ठभूमि के लोगों को एक साथ लाया। इसने किसानों, खेतिहरों और विभिन्न सामाजिक समूहों को एक अन्यायपूर्ण व्यवस्था के खिलाफ लड़ने के लिए एकजुट किया, जिसने उनका भारी शोषण किया। इस सामूहिक लामबंदी का भारतीय समाज पर गहरा प्रभाव पड़ा क्योंकि इसने लोगों के बीच एकता और एकजुटता को प्रदर्शित किया। विरोध प्रदर्शन में भाग लेने वाले विभिन्न धर्मों और जातियों से आए थे, जिन्होंने सामाजिक बाधाओं को तोड़ दिया और सांप्रदायिक सद्भाव को बढ़ावा दिया।

इसके अलावा, इस आंदोलन ने महात्मा गांधी के अहिंसक प्रतिरोध या सत्याग्रह के सिद्धांत को उजागर किया, जो भारत के स्वतंत्रता संग्राम में एक महत्वपूर्ण विचारधारा बन गई। गांधी द्वारा

इस्तेमाल की गई शांतिपूर्ण रणनीति ने कई भारतीयों को ब्रिटिश शासन के खिलाफ सविनय अवज्ञा के समान तरीके अपनाने के लिए प्रेरित किया। इसने राजेंद्र प्रसाद और जे.बी. कृपलानी जैसे नेताओं का भी उदय किया जिन्होंने देश के स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

आर्थिक प्रभाव

चंपारण सत्याग्रह शुरू करने का एक मुख्य कारण ब्रिटिश जमींदारों द्वारा नील की खेती के शोषण से संबंधित मुद्दों को संबोधित करना था। इस विरोध के परिणामस्वरूप, अब बिहार (जिसे पहले चंपारण के नाम से जाना जाता था) में महत्वपूर्ण आर्थिक परिवर्तन हुए, जहाँ किसान यूरोपीय लोगों द्वारा लगाए गए अनुचित भूमि स्वामित्व समझौतों के तहत संघर्ष कर रहे थे।

तिनकठिया (बिना वेतन के जबरन मजदूरी), बटाईदारी प्रणाली और यूरोपीय जमींदारों द्वारा लगाए गए अन्य शोषणकारी स्थितियों जैसे दमनकारी कृषि प्रथाओं के खिलाफ खड़े होकर, गांधी ने हजारों किसानों और मजदूरों की आर्थिक स्थिति को बेहतर बनाने में मदद की। इसके परिणामस्वरूप उनके जीवन स्तर में वृद्धि हुई और भविष्य में अन्याय के खिलाफ खड़े होने के लिए उनमें आत्मविश्वास पैदा हुआ।

सरकारी प्रभाव

चंपारण सत्याग्रह की सफलता ने अहिंसक प्रतिरोध अभियानों के बारे में भारतीय सरकार की धारणा पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला। ब्रिटिश अधिकारी जिन्होंने शुरू में गांधी की रणनीति को महत्वहीन माना था, उन्हें विरोध के व्यापक समर्थन और प्रभावशाली परिणामों पर ध्यान देने के लिए मजबूर होना पड़ा।

इस आंदोलन ने औपनिवेशिक सरकार पर किसानों और मजदूरों को लाभ पहुंचाने वाले कानून बनाने का दबाव भी डाला, जिसके परिणामस्वरूप चंपारण कृषि अधिनियम जैसे कानून बने, जिसने तिनकठिया को समाप्त कर दिया और बटाईदारों को भूमि अधिकार दिए। इस सफलता ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में एक महत्वपूर्ण मोड़ दिखाया, क्योंकि इसने दिखाया कि अहिंसक विरोध सरकारी नीतियों में महत्वपूर्ण बदलाव ला सकता है।

चंपारण सत्याग्रह की विरासत और आधुनिक भारत को आकार देने में इसकी भूमिका

1917 में महात्मा गांधी के नेतृत्व में चंपारण सत्याग्रह को ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के खिलाफ भारत के स्वतंत्रता संग्राम में सबसे महत्वपूर्ण घटनाओं में से एक माना जाता है। इसने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के लिए उत्प्रेरक का काम किया और आधुनिक भारत को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

चंपारण सत्याग्रह की प्रमुख विरासतों में से एक राजनीतिक और सामाजिक परिवर्तन के लिए एक उपकरण के रूप में अहिंसक विरोध का उपयोग करना था। इस आंदोलन से पहले, ब्रिटिश शासन के खिलाफ हिंसक विद्रोह के कई उदाहरण थे, लेकिन गांधी के अहिंसा (अहिंसक प्रतिरोध) को अपनाने के फैसले ने स्वतंत्रता और न्याय की तलाश के लिए एक अधिक शांतिपूर्ण

दृष्टिकोण की ओर बदलाव को चिह्नित किया। इस रणनीति को बाद में अन्य नेताओं ने अपनाया और यह भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का एक अभिन्न अंग बन गया। इसके अलावा, चंपारण सत्याग्रह ने ब्रिटिश शासन के तहत ग्रामीण क्षेत्रों में किसानों के सामने आने वाली समस्याओं को उजागर किया।

इसके अलावा, इस आंदोलन ने ब्रिटिश शासन के खिलाफ बड़े सविनय अवज्ञा अभियानों का मार्ग प्रशस्त किया, जो इसके समाप्त होने के तुरंत बाद हुए। 1920 में गांधी द्वारा शुरू किए गए असहयोग आंदोलन में समाज के सभी कोनों से व्यापक भागीदारी देखी गई, जो गांधीवादी सिद्धांतों जैसे कि बहिष्कार और औपनिवेशिक संस्थाओं के साथ असहयोग पर आधारित थी। चंपारण की विरासत भारत की स्वतंत्रता की लड़ाई से भी आगे तक फैली हुई है क्योंकि इसने उत्पीड़न और अन्याय के खिलाफ वैश्विक स्तर पर इसी तरह के प्रतिरोध आंदोलनों को प्रेरित किया। मार्टिन लूथर किंग जूनियर और नेल्सन मंडेला जैसे नेताओं ने गांधी के तरीकों से प्रेरणा ली और आधुनिक इतिहास को आकार देने में इस आंदोलन के महत्व पर जोर दिया।

चंपारण सत्याग्रह के पीछे की कहानी और ब्रिटिश अधिकारियों पर इसका प्रभाव

चंपारण सत्याग्रह, जिसे चंपारण आंदोलन के रूप में भी जाना जाता है, भारतीय इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना थी, जो ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के खिलाफ़ पहले अहिंसक विरोधों में से एक थी। इसका नेतृत्व 1917 में महात्मा गांधी ने किया था और इसका ब्रिटिश अधिकारियों और भारतीय आबादी दोनों पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा था। उस समय, चंपारण बिहार का एक क्षेत्र था जहाँ नील के बागानों का स्वामित्व ब्रिटिश जमींदारों के पास था, जिन्होंने स्थानीय किसानों को खाद्य फसलों के बजाय नील उगाने के लिए मजबूर किया था।

जैसे ही इस विरोध की खबर पूरे भारत में फैली, इसे समाज के सभी वर्गों से व्यापक समर्थन मिला। विभिन्न धर्मों, जातियों, वर्गों और व्यवसायों के लोगों ने ब्रिटिश उत्पीड़न के खिलाफ गांधी के नेतृत्व में सेना में शामिल हो गए। भारतीयों द्वारा प्रदर्शित इस एकता ने ब्रिटिश अधिकारियों और साथी भारतीयों दोनों को न्याय के लिए लड़ने में एकजुटता के बारे में एक शक्तिशाली संदेश दिया।

आखिरकार, महीनों के संघर्ष और बातचीत के बाद, गांधी ब्रिटिश अधिकारियों के साथ "चंपारण कृषि अधिनियम" के रूप में जाने जाने वाले समझौते पर पहुँचे। इस अधिनियम ने किसानों के अधिकारों को मान्यता दी, तिनकठिया प्रणाली को समाप्त कर दिया और उन्हें अन्य फसलें उगाने की अनुमति दी। यह किसानों के लिए एक महत्वपूर्ण जीत थी और ब्रिटिश सत्ता के लिए एक झटका था।

चंपारण सत्याग्रह के दूरगामी परिणाम थे जो ब्रिटिश अधिकारियों पर इसके तत्काल प्रभाव से परे थे। इसने भारत में भविष्य के अहिंसक आंदोलनों के लिए प्रेरणा का काम किया, जिसमें गांधी का प्रसिद्ध नमक सत्याग्रह भी शामिल है। इसके अलावा, इसने दमनकारी ताकतों को चुनौती देने में एकता और शांतिपूर्ण विरोध की शक्ति को उजागर किया, जिससे ब्रिटिश शासन से स्वतंत्रता के लिए भारत के संघर्ष का मार्ग प्रशस्त हुआ।

अध्ययन की जाने वाली समस्या

चंपारण सत्याग्रह भारत के स्वतंत्रता संग्राम में एक महत्वपूर्ण आंदोलन था जिसका ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन और भारतीय लोगों दोनों पर दूरगामी प्रभाव पड़ा। अध्ययन की जाने वाली समस्या यह है कि इस शांतिपूर्ण विरोध ने भारतीय इतिहास के पाठ्यक्रम को आकार देने और दमनकारी औपनिवेशिक नीतियों को चुनौती देने में इसकी भूमिका पर क्या प्रभाव डाला। अपने मूल में, चंपारण सत्याग्रह ब्रिटिश राज द्वारा लगाए गए अन्यायपूर्ण भूमि कानूनों के खिलाफ एक किसान विद्रोह था। नील के बागान मालिक किसानों को बिना उचित मुआवजे के अपनी जमीन पर नील उगाने के लिए मजबूर कर रहे थे, जिससे अत्यधिक आर्थिक शोषण और व्यापक गरीबी हो रही थी। महात्मा गांधी के नेतृत्व में, जो बाद में भारत के सबसे प्रतिष्ठित नेताओं में से एक बन गए, स्थानीय किसानों ने एकजुट होकर निष्पक्ष व्यवहार और उत्पीड़न से मुक्ति की मांग के लिए अहिंसक सविनय अवज्ञा रणनीति का इस्तेमाल किया।

अध्ययन का औचित्य
चंपारण सत्याग्रह, जिसे नील विद्रोह के रूप में भी जाना जाता है, ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से स्वतंत्रता के लिए भारत के संघर्ष में एक महत्वपूर्ण घटना थी। महात्मा गांधी के नेतृत्व में इस आंदोलन ने न केवल ब्रिटिश नील बागान मालिकों द्वारा भारतीय किसानों के शोषण की ओर ध्यान आकर्षित किया, बल्कि साम्राज्यवाद के खिलाफ भारत की लड़ाई में एक महत्वपूर्ण मोड़ के रूप में भी काम किया। इसलिए, ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन और भारत की स्वतंत्रता की यात्रा दोनों पर इस महत्वपूर्ण घटना के प्रभाव का अध्ययन करना महत्वपूर्ण है। सबसे पहले, ब्रिटेन पर चंपारण सत्याग्रह के प्रभाव की जांच करना आवश्यक है क्योंकि यह इस बात पर प्रकाश डालता है कि गांधी द्वारा नियोजित इस अहिंसक प्रतिरोध रणनीति ने औपनिवेशिक सत्ता को कैसे चुनौती दी और अस्थिर किया। इस आंदोलन की सफलता ने दमनकारी शासन को उखाड़ फेंकने में शांतिपूर्ण विरोध और सविनय अवज्ञा की प्रभावशीलता को उजागर किया। इसने भारतीय किसानों के प्रति ब्रिटिश नीतियों में अपर्याप्तता और अन्याय को भी उजागर किया और अंततः उन्हें भारत पर शासन करने के अपने दृ ष्टिकोण पर पुनर्विचार करने के लिए मजबूर किया। इसके अलावा, इस घटना ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम को कैसे प्रभावित किया, इसका अध्ययन आधुनिक भारत को आकार देने में इसके महत्व को समझने के लिए महत्वपूर्ण है।

शोध का उद्देश्य
चंपारण सत्याग्रह का अध्ययन करने के लिए प्राथमिक शोध उद्देश्यों में से एक भारत के स्वतंत्रता संग्राम को आकार देने में इसके महत्व को समझना है। यह ऐतिहासिक घटना भारत में ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के खिलाफ अहिंसक प्रतिरोध के पहले और सबसे सफल प्रयासों में से एक थी। इसलिए, यह विश्लेषण करना महत्वपूर्ण है कि इस आंदोलन ने महात्मा गांधी के नेतृत्व में बाद के संघर्षों, जैसे असहयोग आंदोलन और नमक सत्याग्रह की नींव कैसे रखी। एक अन्य उद्देश्य ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन पर इस सत्याग्रह के प्रभाव की जांच करना है। चंपारण की सफलता ने भारत में ब्रिटिश शासकों के अधिकार और वैधता को चुनौती देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। बड़े पैमाने पर लामबंदी और शांतिपूर्ण विरोध के माध्यम से, किसान ब्रिटिश अधिकारियों के समर्थन से दमनकारी जमींदारों द्वारा लगाए गए अन्यायपूर्ण नील बागान कानूनों के खिलाफ अपनी आवाज उठाने में सक्षम थे। इन कार्यों ने ब्रिटिश नीतियों और प्रशासनिक निर्णयों को कैसे प्रभावित किया, इसकी जांच करके, हम भारत जैसे विशाल उपनिवेश पर नियंत्रण बनाए रखने के लिए उनकी रणनीतियों के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

इस अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं
- भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में चंपारण सत्याग्रह के ऐतिहासिक महत्व की जांच करना।
- चंपारण सत्याग्रह के आयोजन और नेतृत्व में महात्मा गांधी द्वारा निभाई गई भूमिका का विश्लेषण करना।
- यह आकलन करना कि चंपारण सत्याग्रह के मीडिया कवरेज ने भारत में ब्रिटिश शासन के बारे में जनता की राय को कैसे प्रभावित किया।
- यह जांचना कि कैसे ब्रिटिश औपनिवेशिक नीतियों और करों ने चंपारण सत्याग्रह जैसे विरोध और प्रतिरोध आंदोलनों को जन्म दिया।
- भारत के स्वतंत्रता संग्राम पर चंपारण सत्याग्रह के दौरान इस्तेमाल किए गए अहिंसक विरोध के तरीकों के प्रभाव का पता लगाना।
- नील की खेती और शोषक ब्रिटिश जमींदारों के कारण चंपारण में किसानों और खेतिहरों को होने वाले परिणामों का अध्ययन करना।

परिकल्पना
H0: चंपारण सत्याग्रह का ब्रिटिश शासन से भारत की आजादी की लड़ाई में कोई महत्वपूर्ण योगदान नहीं था।
H2: चंपारण सत्याग्रह ने भारत के स्वतंत्रता संघर्ष में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

शोध पद्धति
चंपारण सत्याग्रह, जिसे भारत में पहला सविनय अवज्ञा आंदोलन भी कहा जाता है, ने ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन और भारत के स्वतंत्रता संग्राम दोनों पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला। इस घटना का अध्ययन करने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली पद्धति में पुस्तकों, अभिलेखीय दस्तावेजों, समाचार पत्रों के लेखों और व्यक्तिगत साक्षात्कारों जैसे विभिन्न स्रोतों से प्राथमिक और द्वितीयक डेटा एकत्र करना शामिल है। इस शोध का सबसे महत्वपूर्ण पहलू प्राथमिक स्रोतों का उपयोग है। इनमें महात्मा गांधी और राजेंद्र प्रसाद जैसे अभियान में शामिल प्रमुख नेताओं द्वारा लिखे गए पत्र, भाषण, डायरी, आधिकारिक रिपोर्ट और अन्य दस्तावेज शामिल हैं। ये स्रोत चंपारण सत्याग्रह के दौरान उनके विचारों, कार्यों और रणनीतियों के बारे में बहुमूल्य जानकारी प्रदान करते हैं। इसके अतिरिक्त, उस समय की तस्वीरों का उपयोग घटनाओं की बेहतर समझ हासिल करने के लिए भी किया जा सकता है। द्वितीयक डेटा भी इस शोध पद्धति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। इसमें इतिहासकारों के कार्य शामिल हैं जिन्होंने विभिन्न दृष्टिकोणों और दृष्टिकोणों का उपयोग करके इस घटना का व्यापक अध्ययन किया है। प्राथमिक स्रोतों के साथ–साथ इन द्वितीयक स्रोतों का विश्लेषण करके, हम इस बात की व्यापक समझ हासिल कर सकते हैं कि चंपारण सत्याग्रह ने ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन और भारत के स्वतंत्रता संग्राम को कैसे प्रभावित किया।

शोध प्रश्न
1. चंपारण सत्याग्रह के मुख्य उद्देश्य और लक्ष्य क्या थे?
2. आंदोलन में महात्मा गांधी की भागीदारी ने इसकी सफलता को कैसे प्रभावित किया?
3. सत्याग्रह के लिए लोगों को संगठित करने में स्थानीय नेताओं की क्या भूमिका थी?
4. ब्रिटिश मीडिया ने चंपारण सत्याग्रह को कैसे चित्रित किया और उस पर कैसे प्रतिक्रिया दी?
5. क्या चंपारण सत्याग्रह का भारत के प्रति ब्रिटिश औपनिवेशिक नीतियों पर कोई महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा?

खोज
चंपारण सत्याग्रह के प्रभाव पर एक प्रमुख निष्कर्ष यह था कि इसने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में एक नेता के रूप में महात्मा गांधी की भूमिका की शुरुआत की। इस आंदोलन से पहले, गांधी केवल स्थानीय स्तर पर सामाजिक और राजनीतिक कार्यों में शामिल थे, लेकिन चंपारण के किसानों को उनकी मांगों को पूरा करने के लिए प्रेरित करने में उनकी सफलता के साथ, उन्हें एक राष्ट्रीय नेता के रूप में मान्यता मिली। इसके अतिरिक्त, चंपारण सत्याग्रह ने ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के खिलाफ भारत के संघर्ष पर अंतर्राष्ट्रीय ध्यान भी आकर्षित किया। इस आंदोलन के दौरान गांधी द्वारा इस्तेमाल किए गए शांतिपूर्ण विरोध और अहिंसक तरीकों ने दुनिया भर के कई लोगों को प्रभावित किया और भारत के उद्देश्य के लिए सहानुभूति पैदा करने में मदद की।

चंपारण सत्याग्रह ने भारत में विभिन्न धार्मिक और जातीय समूहों को एक सामान्य लक्ष्य के तहत एकजुट करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई – ब्रिटिश शासन से स्वतंत्रता प्राप्त करना।

इस अध्ययन के खोज इस प्रकार हैं

- इस आंदोलन का भारतीय समाज और स्वतंत्रता के लिए इसके संघर्ष पर गहरा प्रभाव पड़ा।
- 1917 में महात्मा गांधी के नेतृत्व में चंपारण सत्याग्रह, भारत में ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के खिलाफ पहला अहिंसक जन विरोध था।
- इस सत्याग्रह की सफलता ने गांधीजी को अपने बाद के आंदोलनों जैसे असहयोग आंदोलन और सविनय अवज्ञा आंदोलन में इसी तरह की रणनीति का उपयोग करने के लिए प्रेरित किया।
- इसने ब्रिटिश जमींदारों के अधीन भारतीय नील किसानों द्वारा सामना की जाने वाली दमनकारी और शोषणकारी स्थितियों की ओर ध्यान आकर्षित किया।
- इस आंदोलन के दौरान अहिंसा, सविनय अवज्ञा और आत्मनिर्भरता के गांधीवादी सिद्धांतों को जनता के बीच फैलाया गया, जो भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण तत्व बन गए।

सुझाव

चंपारण सत्याग्रह, जिसे चंपारण आंदोलन या नील आंदोलन के रूप में भी जाना जाता है, ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से स्वतंत्रता के लिए भारत के संघर्ष में एक महत्वपूर्ण घटना थी। मूल रूप से यूरोपीय बागान मालिकों द्वारा भारतीय किसानों पर लगाए गए अन्यायपूर्ण नील खेती प्रणाली के विरोध के रूप में शुरू हुआ यह आंदोलन जल्दी ही एक बड़े उपनिवेश–विरोधी आंदोलन में बदल गया जिसका दोनों पक्षों पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा। चंपारण सत्याग्रह के उल्लेखनीय प्रभावों में से एक महात्मा गांधी की अहिंसक प्रतिरोध रणनीति को लोकप्रिय बनाने में इसकी भूमिका थी। यह पहली बार था जब सविनय अवज्ञा और शांतिपूर्ण विरोध का इस्तेमाल औपनिवेशिक सत्ता को चुनौती देने और हाशिए के समुदायों के लिए न्याय की मांग करने के लिए किया गया था। इसने भविष्य के आंदोलनों के लिए एक मिसाल कायम की और अन्य नेताओं को ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ अपनी लड़ाई में इसी तरह के तरीके अपनाने के लिए प्रेरित किया। इसके अलावा, इस आंदोलन के माध्यम से, गांधी ने खुद को भारत के राष्ट्रवादी संघर्ष में एक प्रमुख व्यक्ति के रूप में स्थापित किया।

इस अध्ययन पर निम्नलिखित सुझाव दिए गए हैं

- 1917 में महात्मा गांधी के नेतृत्व में चंपारण सत्याग्रह, भारत में ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के खिलाफ़ पहले जन आंदोलनों में से एक था।
- इसने प्रतिरोध के एक उपकरण के रूप में टकराव और हिंसा के पिछले तरीकों से अहिंसक सविनय अवज्ञा की ओर बदलाव को चिह्नित किया।
- चंपारण सत्याग्रह की सफलता ने प्रदर्शित किया कि दमनकारी औपनिवेशिक नीतियों को चुनौती देने में शांतिपूर्ण विरोध प्रभावी हो सकता है।
- आंदोलन में गांधी की भागीदारी ने भारतीय किसानों के सामने आने वाले मुद्दों की ओर ध्यान आकर्षित किया, जिन्हें "तिनकठिया" नामक शोषणकारी प्रणाली के तहत गिरमिटिया मज़दूरी करने के लिए मजबूर किया गया था।

निष्कर्ष

अंत में, चंपारण सत्याग्रह भारत के स्वतंत्रता संग्राम में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इसने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में एक नेता के रूप में महात्मा गांधी की सक्रिय भूमिका की शुरुआत को चिह्नित किया और ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के खिलाफ विरोध करने के लिए उनके अहिंसक तरीकों को प्रदर्शित किया। इस आंदोलन की सफलता ने न केवल उत्पीड़ित किसानों को राहत दी, बल्कि भारत के अन्य क्षेत्रों को भी इसका अनुसरण करने के लिए प्रेरित किया, जिससे दमनकारी नीतियों के खिलाफ व्यापक सविनय अवज्ञा और जन आंदोलन हुआ। इसके अलावा, इस सत्याग्रह का ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन पर गहरा प्रभाव पड़ा। ब्रिटिश सरकार को भारतीय किसानों के प्रति अपनी शोषणकारी नीतियों पर पुनर्विचार करने और विधायी परिवर्तनों के माध्यम से संशोधन करने के लिए मजबूर होना पड़ा। इसने एक दमनकारी शासन के खिलाफ अहिंसक प्रतिरोध की संभावित शक्ति को उजागर किया और नमक सत्याग्रह और भारत छोड़ो आंदोलन जैसे भविष्य के आंदोलनों का मार्ग प्रशस्त किया। कुल मिलाकर, यह देखा जा सकता है कि चंपारण सत्याग्रह ने अलग–अलग पृष्ठभूमि के लोगों को एक उद्देश्य के तहत एकजुट करके, प्रतिरोध के प्रभावी तरीकों का प्रदर्शन करके और अन्य आंदोलनों को प्रभावित करके भारत के स्वतंत्रता संघर्ष को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिसके कारण अंततः भारत को ब्रिटिश शासन से स्वतंत्रता मिली। इस प्रकार, यह ऐतिहासिक घटना भारत के स्वतंत्र राष्ट्र बनने की यात्रा को समझने में हमेशा महत्वपूर्ण रहेगी।

अध्ययन की सीमाएँ

चंपारण सत्याग्रह भारत के स्वतंत्रता संग्राम में एक महत्वपूर्ण घटना थी और इसका ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा। हालाँकि, किसी भी ऐतिहासिक घटना की तरह, इसकी भी अपनी सीमाएँ हैं जिन्हें स्वीकार किया जाना चाहिए।

इस अध्ययन की एक बड़ी सीमा प्राथमिक स्रोतों या सत्याग्रहियों के प्रत्यक्ष खातों की कमी है। चंपारण सत्याग्रह पर मौजूद अधिकांश साहित्य द्वितीयक स्रोतों, जैसे समाचार पत्रों के लेखों और सरकारी अभिलेखों पर आधारित है। हालाँकि ये स्रोत घटनाओं के बारे में मूल्यवान जानकारी प्रदान कर सकते हैं, लेकिन उनमें पूर्वाग्रह या चूक हो सकती है।

एक और सीमा यह है कि मौजूदा शोध का अधिकांश हिस्सा आंदोलन का नेतृत्व करने में महात्मा गांधी की भूमिका पर केंद्रित है। जबकि गांधी ने चंपारण में किसानों को संगठित करने और संगठित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, ऐसे अन्य नेता और व्यक्ति भी थे जिन्होंने इसकी सफलता में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इन कम–ज्ञात हस्तियों के योगदान का व्यापक रूप से अध्ययन और दस्तावेजीकरण नहीं किया गया है।

इसके अलावा, यह भी ध्यान देने योग्य है कि चंपारण सत्याग्रह कोई अकेली घटना नहीं थी, बल्कि भारत में नील की खेती करने वालों के खिलाफ़ एक बड़े आंदोलन का हिस्सा थी। वास्तव में, इस समय अवधि के दौरान भारत के अन्य हिस्सों में भी इसी तरह के कृषि संघर्ष हो रहे थे। इसलिए, भारत के स्वतंत्रता संग्राम का सारा श्रेय सिर्फ़ एक घटना को देना अनुचित होगा।

आगे का शोध

ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन और भारत के स्वतंत्रता संग्राम पर इसके प्रभाव को पूरी तरह से समझने के लिए चंपारण सत्याग्रह पर आगे और शोध आवश्यक है। यह ऐतिहासिक घटना भारत की स्वतंत्रता की लड़ाई में एक महत्वपूर्ण मोड़ है, और इसकी पेचीदगियों में गहराई से जाने से ऐसी अंतर्दृष्टि और दृष्टिकोण मिल सकते हैं जिन्हें शायद अनदेखा किया गया हो।

आगे के शोध का एक क्षेत्र सत्याग्रह से पहले चंपारण में सामाजिक और आर्थिक स्थितियों पर ध्यान केंद्रित कर सकता है। इससे यह बेहतर समझ मिलेगी कि गांधी ने उत्पीड़न के खिलाफ अपना विरोध शुरू करने के लिए इस विशेष क्षेत्र को क्यों चुना। नील की खेती करने वाले किसानों के सामने आने वाले विशिष्ट मुद्दों, जैसे कि अन्यायपूर्ण भूमि का स्वामित्व और उच्च राजस्व मांग, की जांच करने से यह पता चल सकता है कि इन कारकों ने किसानों की गरीबी में कैसे योगदान दिया और आखिरकार उन्हें गांधी से मदद लेने के लिए प्रेरित किया।

सन्दर्भ

1. कैनेडी, जे., और पुरुषोत्तम, एस. (2012). नक्सलबाड़ी से परेरू स्वतंत्र भारत में माओवादी विद्रोह और प्रति–विद्रोह का तुलनात्मक विश्लेषण। समाज और इतिहास में तुलनात्मक अध्ययन, 54(4), 832–862।
2. रॉय, एम. (2010)। "स्पीकिंग" सबाल्टर्न: अफ्रीकी अमेरिकी और दलित/भारतीय साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन।
3. आचार्य, ए. (2014)। वैश्विक अंतरराष्ट्रीय संबंध (आईआर) और क्षेत्रीय दुनियारू अंतरराष्ट्रीय अध्ययन के लिए एक नया एजेंडा। अंतरराष्ट्रीय अध्ययन त्रैमासिक, 58(4), 647–659।
4. ग्रोव, आर. एच. (2016)। औपनिवेशिक संरक्षण, पारिस्थितिक आधिपत्य और लोकप्रिय प्रतिरोधः एक वैश्विक संश्लेषण की ओर। द राइज़ एंड फ़ॉल ऑफ़ मॉडर्न एम्पायर्स, वॉल्यूम II (पृष्ठ 401–436) में। रूटलेज।
5. शॉक, के. (2013)। नागरिक प्रतिरोध का अभ्यास और अध्ययन। जर्नल ऑफ पीस रिसर्च, 50(3), 277–290।
6. बेदी, एच.पी., और टिलिन, एल. (2015)। भारत में अंतर–राज्यीय प्रतिस्पर्धा, भूमि संघर्ष और प्रतिरोध। ऑक्सफोर्ड डेवलपमेंट स्टडीज, 43(2), 194–211।
7. सलीबा, वी., वॉशर, पी., पेट्ट, पी., कक्कड़, एम., अब्बास, एस. , रघुवंशी, बी., और मैककी, एम. (2016)। यूनाइटेड किंगडम और भारत में मीडिया ने एनडीएम–1 के उद्भव का प्रतिनिधित्व कैसे किया, इसका तुलनात्मक विश्लेषण। जर्नल ऑफ पब्लिक हेल्थ पॉलिसी, 37, 1–19।
8. ओश्गोर्मन, आर. (2017)। पर्यावरण संवैधानिकता: एक तुलनात्मक अध्ययन। ट्रांसनेशनल एनवायरनमेंटल लॉ, 6(3), 435–462।
9. राजगोपाल, बी. (2017)। अंतर्राष्ट्रीय कानून और सामाजिक आंदोलनरू प्रतिरोध के सिद्धांतीकरण की चुनौतियाँ। वैश्वीकरण और राज्यों की सामान्य ज़िम्मेदारियों में (पृष्ठ 495–531)। रूटलेज।
10. क्रेमर, आर., व्हाइटमैन, जी., और बनर्जी, बी. (2013)। नियमगिरि में संघर्ष और एस्ट्रोटर्फिंगरू कॉर्पोरेट विरोधी सामाजिक आंदोलनों में राष्ट्रीय वकालत नेटवर्क का महत्व। संगठन अध्ययन, 34(5–6), 823–852।
11. सिंह, एस. के. (2019)। प्रेमचंद, औपनिवेशिक उत्तर भारत में राष्ट्रवाद और नागरिक प्रतिरोध। भारतीय आर्थिक और सामाजिक इतिहास समीक्षा, 56(2), 171–194। 12. निल्सन, ए. जी., नीलसन, के. बी., और वैद्य, ए. (2022)। भारत में कानून, सामाजिक आंदोलन और राज्य गठन का सिद्धांतीकरण। दक्षिण एशिया, अफ्रीका और मध्य पूर्व का तुलनात्मक अध्ययन, 42(1), 20–35.
12. रहमान, टी. (2018). भारत में उपनिवेशवाद विरोधी प्रतिरोध के रूप में जिहादः 1831–1920 के दशक. पाकिस्तान जर्नल ऑफ हिस्टोरिकल स्टडीज, 3(2), 1–42. 14. वसीउद्दीन, ई. (2023). भारत में ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के खिलाफ प्रतिरोध के रूप में साहित्य.
13. हक्सर, वी. (2002). सविनय अवज्ञा और असहयोग. सविनय अवज्ञा इन फोकस (पृष्ठ 144–158). रूटलेज. 16. मंजापरा, के. (2012). ज्ञानपूर्ण अंतर्राष्ट्रीयता और स्वदेशी आंदोलन, 1903–1921. आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक, 53–62. 17.
14. सलीम, एन., साकिब, के.एम., और मुख्तार, एच. राज के लिए सबसे बड़ा खतरा कौन था – असहयोग आंदोलन (1920–22) या सविनय अवज्ञा (1930–34)? क्यों? असहयोग और सविनय अवज्ञा के बीच एक तर्क।